पौराणिक मिथकों के मॉडर्न किस्सागो

कुछ नए साहसी लेखकों ने पौराणिक किरदारों को मॉडर्न शब्दावली में अपनी नई व्याख्याओं के साथ पेश करके अपने लिए बनाए लाखों नए पाठक

■ **मनीषा पांडेय** और **मानसी शर्मा माहेश्वरी**

कहानी शुरू होती है दो चित्रों से. पहला चित्र शिव और पार्वती का है. इसमें शिव जमीन पर लेटे हैं. पार्वती का एक पैर शिव की छाती पर है और चेहरा गुस्से से तमतमा रहा है. एक दूसरा चित्र है विष्णु और लक्ष्मी का. विष्णु क्षीरसागर में शेषशैया पर लेटे हुए हैं और लक्ष्मी उनके पैर दबा रही हैं. दोनों चित्रों की आधुनिक स्त्रीवादी व्याख्याएं हो सकती हैं. मसलन, पहले में पार्वती स्त्री शक्ति की प्रतीक हैं और दूसरे में लक्ष्मी स्त्री के कमतर होने का. लेकिन भारतीय पौराणिक मिथकों को नए सिरे से गढ़ने वाले लेखकों में से एक देवदत्त पटनायक इसकी व्याख्या कुछ यूं करते हैं, ''पति लेटा है, कुछ काम नहीं करता. पत्नी गुस्से में है. उठो, जाओ, काम करो. पत्नी पति पर सवार हो जाती है. अब पति काम करके आया है. बहुत थका है. पत्नी उसे प्यार करती है, गले लगाती है. उसका ख्याल करती है.''

लक्ष्मी और पार्वती दरअसल दो स्त्रियां नहीं हैं. वे एक ही स्त्री के दो रूप हैं. पटनायक कहते हैं, ''तुम मुझे अपमानित करोगे, मैं तुम्हारा संहार करूंगी. तुम मुझे प्यार करोगे, मैं तुम्हें गले लगाऊंगी.''

ये वही सदियों पुरानी पौराणिक कहानियां हैं, लेकिन उनकी व्याख्याएं बदलती रही हैं. बदलती व्याख्याओं से ही सूत्र पकड़कर पटनायक, अशोक बैंकर, अश्विन सांघी और आनंद नीलकंठन जैसे लेखक उन पुरा कथाओं के पात्रों को आज के खासकर युवा पाठकों के आस्वाद को ध्यान में रखकर पेश कर रहे हैं. मॉडर्न अंदाज वाली इस किस्सागोई में घटनाक्रमों की रफ्तार और नाटकीयता पर इन लेखकों की गहरी पकड़ है. अमीश त्रिपाठी इक्कीसवीं सदी में इस शैली के पहली पीढ़ी के अगुआ लेखक माने जाते हैं, शिव पर लिखी जिनकी त्रयी ने युवा पाठकों की दुनिया में खासी हलचल-सी मचा दी थी.

त्रिपाठी की राय में ''किस्से-कहानी का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना कि मनुष्य का इतिहास.'' मनुष्य ने लिपि और लेखन की खोज भी नहीं की थी, किस्से-कहानियां तब भी थे. भारत में कई हजार सालों से पीढ़ी दर पीढ़ी वाचिक परंपरा में कहानियां सुनाई और संरक्षित की जाती रही हैं. अमीश पूछते हैं, ''आखिर इन कहानियों में ऐसा क्या है कि वक्त के साथ उनका रूप बदलता रहा. लेकिन कहानियां ज्यों की त्यों हैं.'' पटनायक के शब्दों में इसका जवाब कुछ यूं है: ''इनसानी जिंदगी, रिश्तों और भावनाओं का कोई ऐसा रंग नहीं है, जो इन कहानियों में मौजूद न हो. प्रेम, दुख, ईर्ष्या, छल, धोखा, युद्ध, संपत्ति, परिवार यानी वह सब कुछ जो आज से 2,000 साल पहले भी था और आज से 2,000 साल बाद भी मौजूद रहेगा. वक्त के साथ उसकी व्याख्याएं और अर्थ बदलते रहेंगे.''

सभी इलस्ट्रेशनः **अजय ठाकुरी**

अमीश त्रिपाठी
लेखक

''हिंदू होने का ठप्पा और धर्म का आवरण कहानियों के मानवीय पक्ष को कमजोर करता है.

मेलूहा के मृत्युंजय
लेखकः अमीश त्रिपाठी
वेस्टलैंड प्रकाशन
कीमतः 150 रु.

आनंद नीलकंठन
लेखक

''असुर को रामायण की विपरीत कहानी माना जा सकता है क्योंकि यह रावण के नजरिए से लिखी गई और लोककथाओं से ली गई है.''

असुर
लेखकः
आनंद नीलकंठन
मंजुल पब्लिकेशन
मूल्य 295 रु.

घर-गृहस्थी वाले शंकर

किताब में पेश छवि

इस किताब में शिव शक्तिशाली सार्वभौम देवता की बजाए एक मनुष्य के रूप में हैं. लेखक के अनुसार कोई भी जन्म से देवता नहीं होता. यह तो उनके काम और जीवन की ऊंचाई थी, जिसने उन्हें देवता बनाया.

पारंपरिक छवि

सर्प और जटाधारी, दुनिया के विनाश की क्षमता रखने वाले ब्रह्मचारी योगी.

आम आदमी-सा लंका नरेश

किताब में पेश छविः

असुर में रावण का किरदार किसी भी आम आदमी जैसा ही है. वह हंसता है, रोता है, दूसरों की रईसी से जलता है और वह सब कुछ पाने की ख्वाहिश रखता है जो दूसरों के पास है.

पारंपरिक छविः

लंका का राजा रावण बेहद ताकतवर था. उसने सीता का हरण किया था और यही राम के हाथों उसकी मौत का कारण बना.

भारत के जनमानस में गहरे तक समाई *रामायण* की कहानी को आधुनिक रूप में पेश करने वाले अशोक के. बैंकर के चरित्र वाल्मीकि और तुलसीदास की रामायण के चरित्रों से अलग हैं. मोटे तौर पर कहानी वही है लेकिन चरित्रों का विश्लेषण अलग अंदाज का है. उनकी भावनात्मक व्याख्याएं भिन्न हैं. बैंकर साफ कहते हैं, ''हर कहानी की यही नियति है. उसका कोई एक अंतिम अर्थ नहीं होता. हर किसी के अपने राम हैं. हर मनुष्य उसकी अपने ढंग से व्याख्या करता है.''

इसमें दो राय नहीं कि लोकमानस में पौराणिक कथाओं के अनगिनत संस्करण हैं. इसी बात को आगे बढ़ाते 'ए पटनायक एक रोचक बात कहते हैं, ''मां राम की कहानी सुनाती हैं. उस कहानी में एक दिन कैकेयी दुष्ट स्त्री है तो दूसरे दिन वह भी बेचारी हो जाती है. एक दिन कहानी में शूर्पणखा राम को रिझने की कोशिश करने वाली राक्षस स्त्री है तो दूसरे दिन उसके लिए भी करुणा होती है. वह तो राम से प्रेम करने लगी थी.'' इस तरह दरअसल बहुत बार चरित्रों को नैतिक पैमानों पर स्वीकारते और नकारते हुए भी आखिरकार हम मानते हैं कि कोई अच्छा या बुरा नहीं है. सब दरअसल मनुष्य हैं.

आनंद नीलकंठन वैसे तो इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के कर्नाटक में बेलगाम डिविजन के मैनेजर (रीटेल सेल्स) हैं. लेकिन रावण और कुछ दूसरे अल्पज्ञात किरदारों पर लिखे उनके उपन्यास *असुर* ने उन्हें इस शैली के लेखकों की जमात में ला खड़ा किया है. कुबेर रावण का सौतेला भाई था. रावण की मां और भाई-बहन उसकी समृद्धि देखकर जल-भुन जाते थे. रावण ने जीवन के उन सभी संघर्षों का सामना किया जो किसी भी आम हिंदी फिल्म के हीरो की जिंदगी में आते हैं. रावण की कहानी के यही वे पहलू थे जो उन्हें बचपन से ही अपनी ओर आकर्षित करते आ रहे थे. और उन्होंने जब रावण समेत पौराणिक कथाओं के दूसरे खलनायकों की कहानियों को जुटाकर, उन्हें खुद खलनायकों के नजरिए से पेश किया तो पाठक विभिन्न महाकाव्यों के ग्रे शेड वाले अन्य किरदारों के बारे में भी जानने को उत्सुक हो उठे. *असुर* के अलावा नीलकंठन के दूसरे उपन्यास *अजेय* को भी जबरदस्त सराहना मिली.

अशोक बैंकर का उपन्यास *दशराजन* ऋग्वेद में वर्णित दस राजाओं के युद्ध की कथा है. इसमें कबीलों के राजाओं ने मिलकर एक साथ भारत के एक तुत्सु कबीले के राजा सुदास पर हमला किया. किस्सा यह है कि बहुत कम धन, बल के बावजूद अपने विवेक और आत्मा की शक्ति से सुदास ने इस राजाओं की विशालकाय सेनाओं का मुकाबला किया और जीत हासिल की. *दशराजन* में कहानी ज्यों की त्यों है लेकिन किस्सागोई और भावनात्मक जुड़ाव इसकी खासियत बन गया है. आखिर वह कौन-सी ताकत

इन तिलों में तेल बंत है

पौराणिक पात्रों में बड़ी अपील है लेकिन उनका छिद्रान्वेषण अनुचित

जब 1975 में मैंने जब अपना उपन्यास *दीक्षा* लिख कर पूरा किया था तब मुझे कोई अनुमान नहीं था कि उसकी विशेषता क्या है. मैंने तो सहज भाव से एक उपन्यास लिखा था. मैं उसके आगे के खंड लिखता गया और उस उपन्यास के पक्ष-विपक्ष पर ही नहीं, उसके हेतु और प्रयोजन पर भी चर्चा होने लगी. तब मेरे मन में पहली बार यह भाव जागा कि रामकथा पर लिखा गया कदाचित् यह पहला उपन्यास है. वैसे तो चतुरसेन शास्त्री का *वयं रक्षाम:* उससे भी पहले लिखा गया था लेकिन वह रावण तथा राक्षसों पर केंद्रित था. जीत चाहे उसमें भी राम की ही हुई हो किंतु मुख्य पात्र रावण ही था.

मेरे उपन्यास पर मेरे आलोचक मित्रों ने यहां तक कहा था कि जिसको रामकथा पढ़नी होगी वह तुलसीदास और वाल्मीकि को पढ़ेगा, वह नरेंद्र कोहली को क्यों पढ़ेगा...और जिसको उपन्यास पढ़ना होगा वह प्रेमचंद और जैनेंद्र को पढ़ेगा, तुम्हारी रामकथा की पोथी क्यों पढ़ेगा. उस भविष्यवाणी की वास्तविकता तो तब प्रकट हुई, जब *अभ्युदय* के संस्करण पर संस्करण छपते चले गए. मैं समझ गया कि वे आलोचक न दूरदर्शी थे, न भविष्यवक्ता.

दीक्षा आज 45 वर्ष बाद भी धड़ल्ले से छप और बिक रही है. हिंदी में रामकथा पर ही अनेक उपन्यास लिखे गए और उनके साथ ही पौराणिक उपन्यास लिखने की एक परंपरा-सी चल पड़ी. एक आलोचक मित्र ने कहा था, ''इन तिलों में तेल नहीं है; व्यर्थ ही परिश्रम कर रहे हो.'' अब देखता हूं कि तेल की धारा ही बहने लगी है. वय में मुझ से बड़े और छोटे लेखक, सब ही देख पा रहे हैं कि उन तिलों में कितना तेल है. साहित्य के क्षेत्र में इस प्रकार की भविष्यवाणियां या तो कम अनुभव के कारण होती हैं, या फिर पूर्वाग्रहों के कारण. लेखक का मन यदि अपने समाज, देश और राष्ट्र के अनुकूल है तो वही जानता है कि साहित्य में क्या और कैसा होना चाहिए.

अपने बाद लिखी गई पौराणिक कृतियों को देख कर प्रसन्नता होती है किंतु जब उनमें से वे रचनाएं देखता हूं, जो लिखी तो पौराणिक पात्रों और घटनाओं के आधार पर गई हैं; किंतु उनको समझने की समझ पराई है, तो दुख होता है. मौलिकता लाने के लिए प्रख्यात कथाओं के न तो पात्रों को विकृत किया जा सकता है, न उसकी घटनाओं को और न ही उनके मूल्यों को. वह लेखक के हाथ का खिलौना नहीं है कि उसे किसी भी ओर मोड़ दे. उनका सृजन हो चुका है और उनका ढांचा वही रहेगा. स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि गंदे हाथों से चरणामृत नहीं लिया जाता. ये प्रख्यात कृतियां तो हमारी संस्कृति की धरोहर हैं. आप रूढ़ियां तोड़ सकते हैं किंतु परंपराओं की तो रक्षा ही करनी पड़ेगी.

अपने बाद के लेखकों की कृतियों को देख कर प्रसन्न भी होता हूं और उन्हें सावधान भी करना चाहता हूं कि उत्कर्ष का अवमूल्यन वांछित नहीं है. संभव हो तो इस सात्विक धारा से अपने मन को धो कर अपना परिष्कार करें. इन उदात्त पात्रों के सत्संग से अपने मन को भी उतना ही सात्विक कर लें. ऐसी रचनाएं अपने हृदय का रक्त पिला कर रची जाती हैं.

मेरा अपना अनुभव है कि जब मैं रामकथा लिख रहा था तो मेरा मन भी जैसे राम के साथ वनों में उन वनवासियों के पास ही था. मैं अपने एक मित्र के साथ चित्रकूट गया था. वहां मंदाकिनी पार करने के लिए जिस केवट की नाव में हम बैठे, वह मुझे इतना आत्मीय लगा कि मन हुआ कि उसके कष्ट स्वयं ले लूं और किसी भी प्रकार का सुख दे सकूं तो अवश्य दूं. उस समय उसके बच्चे को चार आने दिए तो वह इतना प्रसन्न हुआ जैसे खजाना मिल गया हो. नासिक जाते हुए मुंबई से गाड़ी पकड़ी तो उस डिब्बे में एक श्रमिक अपने परिवार के साथ यात्रा कर रहा था. उसे टी.टी.ई. ने बिना टिकट पकड़ लिया. मुझे लगा, वह जटायु का ही कोई संबंधी है. मैंने उस परिवार के टिकटों के पैसे भर दिए.

इसलिए जब मैं रामकथा के उन लेखकों की पुस्तकें देखता हूं, जिनमें किसी और पुस्तक के पन्ने के पन्ने टीप दिए गए हैं या स्वयं को महान बनाने के लिए श्रेष्ठतम पात्रों के चरित्रों में भी छिद्रान्वेषण किया जाता है, तो दुख होता है. साहित्य संसार को सुंदर बनाने का एक श्रेष्ठ उपकरण है. उसके माध्यम से जब सरस्वती के आंगन को अस्वच्छ किया जाता है तो सहज ही उसके विरोध में मन कुछ कठोर हो जाता है.

—नरेंद्र कोहली हिंदी लेखक हैं

मेहमान का पन्ना

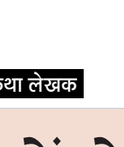

नरेंद्र कोहली

सुखी-समृद्ध विष्णु

किताब में पेश छवि

विष्णु का तपस्वी और गृहस्थ, दोनों रूप है. मोहिनी विष्णु का स्त्री रूप है, जो बताता है कि आध्यात्मिक विकास के लिए भौतिक सुखों का त्याग जरूरी नहीं.

पारंपरिक छवि

दस अवतारों वाले दशावतार माने जाने वाले विष्णु जग के पालनकर्ता हैं.

देवदत्त पटनायक
लेखक

''मेरी तलाश इन कहानियों में अनकहे की खोज है. वह क्या है, जो कहने से बचा रहा गया है.''

विष्णु के सात रहस्य
लेखक: देवदत्त पटनायक
राजपाल प्रकाशन
कीमत: 265 रु.

है, जो धन, जनबल की ताकत से बड़ी है. एक मायने में इच्छाशक्ति की जीत की कहानी.

पटनायक की सबसे चर्चित दो किताबें *विष्णु के सात रहस्य* और *शिव के सात रहस्य* इन देवताओं की व्याख्या करती हैं. शिव के अनेक रूप हैं. वे औघड़ भी हैं, ब्रह्मचारी योगी भी और अपनी पत्नी, पुत्रों के साथ गृहस्थ भी. आश्रम का भोग करने वाले भी. इसमें से कौन-सा शिव का वास्तविक रूप है? वे कोई एक हैं या सब कुछ? ऐसे ही सवालों की रोचक व्याख्याओं से भरी है *शिव के सात रहस्य.*

मिथॉलजी के मॉडर्न लेखकों में शुमार 45 वर्षीय अश्विन सांघी के इस जमात में आने की कहानी कम दिलचस्प नहीं है. एम.के. सांघी समूह के निदेशक अश्विन 2004 में श्रीनगर दौरे पर गए थे. उन्हीं के शब्दों में, ''मैं तो घूमने गया था. यहां के खानियार इलाके में 112 ईस्वी में बनी एक पुरानी इमारत है, जिसमें 14वीं सदी में एक मुसलमान के शव को दफन किया गया था. इसके नीचे एक और शव दफन है, जो किसी यहूदी का है. मेरे ड्राइवर ने बताया कि स्थानीय मान्यता के मुताबिक, यंदी का वह शव ईसा मसीह का है, जो सूली से बच गए और भारत आ गए. कई साल तक वे कश्मीर घाटी में रहे. जिस इमारत में ये दोनों शव दफन हैं उसका नाम है रोजाबेल-टॉम्ब ऑफ प्रॉफिट. यही कहानी मेरे पहले उपन्यास *द रोजाबेल लाइन* का आधार बनी.'' *द रोजाबेल लाइन* ईसा मसीह के सूली से बच निकलने के बाद की रहस्य और रोमांच से भरी कहानी है.

हालांकि पौराणिक कथानकों को लेकर किए जा रहे इस तरह के बोल्ड प्रयोगों से पुरानी पीढ़ी के लेखक और अध्येता पूरी तरह से सहमत नहीं हैं. रामायण के पात्रों को लेकर सत्तर के दशक में उपन्यास लिखने वाले नरेंद्र कोहली की राय में, ''जब ऐसी रचनाएं देखता हूं जो लिखी तो पौराणिक पात्रों और घटनाओं के आधार पर गई हैं लेकिन उनको समझने की समझ पराई है, तो दुख होता है. मौलिकता लाने के लिए प्रख्यात कथाओं के न तो पात्रों को विकृत किया जा सकता है, न उसकी घटनाओं को और न ही उनके मूल्यों को. वह लेखक के हाथ का खिलौना नहीं कि उसे किसी भी ओर मोड़ दे.'' (देखें मेहमान का पन्ना: *इन तिलों में तेल बंत है*) वहीं आध्यात्मिक साहित्य के अध्येता भगवान सिंह इसमें एक और पहलू जोड़ते हुए कहते हैं कि ''आधुनिक युग के सच को पौराणिक सच के साथ नहीं मिलाया जा सकता क्योंकि आज का जीवन बंत जटिल है जबकि पहले का जीवन बंत सुलझा हुआ था.'' वे साफ कहते हैं कि ''इस तरह के लेखक भ्रम पैदा कर रहे हैं. किसी भी पौराणिक चरित्र का मनमाना इस्तेमाल करना गलत है.''

अश्विन सांघी
लेखक

''युवा हर बात को विज्ञान की कसौटी पर परखना चाहते हैं, मैंने ठीक यही किया.''

कृष्ण कुंजी
लेखक: अश्विन सांघी
यात्रा/ वेस्टलैंड
कीमत: 295 रु.

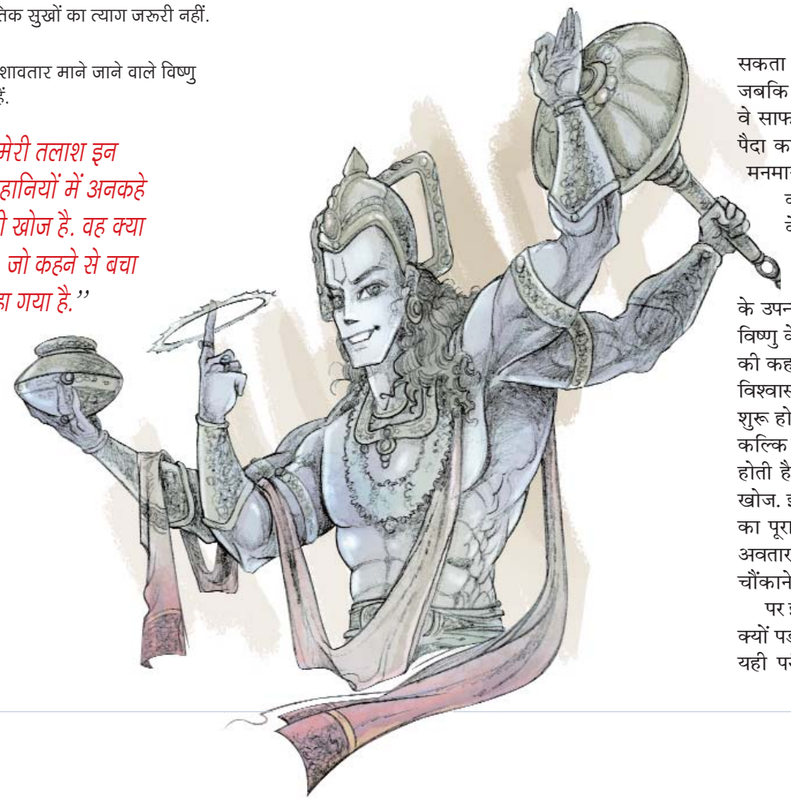

कोहली और भगवान सिंह सरीखे विद्वानों के एतराज को सांघी के *कृष्ण कुंजी* और दूसरे लेखकों के ऐसे ही उपन्यासों के संदर्भ में समझ जा सकता है. सांघी के उपन्यास *कृष्ण कुंजी* में कलियुग में भगवान विष्णु के अंतिम अवतार माने जाने वाले कल्कि की कहानी है. इसमें एक लड़के को हमेशा यही विश्वास दिलाया जाता है कि वही कल्कि है. फिर शुरू होता है अपराध और रोमांच का सफर. यह कल्कि सीरियल किलर बन जाता है. साथ ही शुरू होती है भगवान कृष्ण के बहुमूल्य खजाने की खोज. इसे लिखने के लिए सांघी ने कल्कि पुराण का पूरा अध्ययन किया. वे बताते हैं, ''अंतिम अवतार कल्कि के बारे में की गई भविष्यवाणियां चौंकाने वाली हैं.''

पर इन कहानियों को फिर से कहने की जरूरत क्यों पड़ी? पटनायक की सुनें: ''सारी दुनिया में यही परंपरा है. धरती के हर कोने में आपको किताबों की आलमारियां इतिहास, मिथकों और लोककथाओं की पुनर्व्याख्याओं से भरी मिलेंगी. सिर्फ हमारे देश में यह नहीं हो रहा था. हमारे लेखकों को कभी इसकी जरूरत ही नहीं महसूस हुई. मैं इन कहानियों को सिर्फ उस रूप में नहीं पढ़ना चाहता, जैसे ये कही गई हैं. मेरी तलाश है उस अनकहे की खोज. वह क्या है, जो कहने से बचा रहा गया.''

पर अचानक ऐसा क्या हुआ कि हिंदू मिथकीय कहानियां इतने बड़े पैमाने पर उपन्यासों की शक्ल में हमारे सामने आने लगीं? क्या इसमें हिंदुत्ववाद के उभार और अपनी हिंदूवादी अस्मिता को बचाने के संकेत भी छिपे हुए हैं? बैंकर कहते हैं, ''सच इसके बिल्कुल उलट है. इन कहानियों को फिर से इसलिए कहा जा रहा है ताकि ये हिंदू अस्मिता और धर्म विशेष के आवरण जैसे संकुचित दायरे से बाहर आ सकें.'' बैंकर के ही शब्दों में, मैं न हिंदू हूं, न धार्मिक हूं. धर्म और परंपरा के बारे में कुछ भी नहीं जानता. मैं हिंदू तौर-तरीकों से पला-बढ़ा

किलर कल्कि?

किताब में पेश छवि

एक बच्चे को बताया जाता है कि वह भगवान विष्णु का अंतिम अवतार कल्कि है. बुराई खत्म करने को वह सीरियल किलर बन जाता है.

पारंपरिक छवि

कल्कि कलियुग की सारी बुराइयां खत्म करेगा.

मिथक, किस्सा और कथा

मिथकों में खासा लचीलापन और समावेशी क्षमता होती है लेकिन तोड़-मरोड़ की गुंजाइश नहीं होती

मेहमान का पन्ना

डॉ. प्रतिभा रॉय

कथा का सबसे पहले जन्म कब हुआ? कौन था उसका पहला रचयिता? दुनिया के किस हिस्से और किस भाषा में रची गई पहली कथा? इन सवालों के जवाब जानने के लिए हमें इतिहास के जरिए थोड़ा अतीत में जाना होगा. लेकिन इतिहास में भी लिखित दास्तानों का ही जिक्र मिलता है, जबकि मानव इतिहास का ज्यादातर हिस्सा अलिखित रह गया है. ऐसे में लेखक मनुष्य, प्रकृति और ब्रह्मांड का रहस्य जानने के लिए मानव अस्तित्व की जड़ों को खंगालने की कोशिश करते हैं, ताकि कुछ शाश्वत और आध्यात्मिक मूल्यों के जरिए शांति और सह-अस्तित्व कायम हो सके. इसमें वे मिथकों की मदद लेते हैं. इतिहास तो अतीत है जबकि मिथक सदाबहार होते हैं. तो फिर मिथकों का महत्व क्या है? लेखक बार-बार क्यों कुछ खास मिथकों पर कलम चलाते हैं?

जोसफ कैंपबेल ने कहा था, ''मिथक एक तरह की ज्ञान ह्यगाली है. इसकी कथाएं गढ़ी'ई, कोरी गप्प हो सकती हैं लेकिन उनमें सदियों पुराने सत्य की गूंज होती है. वे व्यक्ति को समाज से और समाज को प्रकृति से जोड़ती हैं. मिथकों में संगति कायम करने वाली शक्ति मौजूद होती है.'' फ्रायड कहते थे कि मिथक संस्कृति के सपने की तरह हैं. मिथक और कथा-कहानियां शायद मनुष्य के गुणसूत्रों, रक्तमज्जा और मनोदशा में गुंथी हुई हैं. आदमी भविष्य से तो आंखें चुरा सकता है लेकिन अतीत से कैसे बचेगा? इसीलिए साहित्यकार मिथकीय पात्रों को पूरी तरह जाने-समझे बिना भी उनमें खुद को जाने-अनजाने ढाल लेने की कोशिश करते हैं और वही बन जाते हैं. प्रसिद्ध भाषा और नृविज्ञानी लेवी स्ट्रॉस कहते हैं, ''मैं यह बताने का दावा नहीं करता कि आदमी मिथकों में कैसे सोचता है, बल्कि यह कि उसके अनजाने में ही मिथक कैसे उसके दिमाग को संचालित करते हैं.'' इसलिए जब कोई समकालीन कथा मिथक बनती है तो वह बिलाशक सदियों पुरानी सांस्कृतिक धरोहर का ही नए रंग-रूप में विस्तार होती है.

आदमी खुद भी एक मिथक है क्योंकि वह नहीं जानता कि कहां से आया है और कहां जाएगा. जीवन और मृत्यु दोनों ही उसके लिए रहस्य हैं. मिथक यथार्थ नहीं होते लेकिन उनमें यथार्थ की डोर छिपी होती है. मनुष्य भी अनित्य (शाश्वत) नहीं होता जबकि उसका जीवन यथार्थ है.

हम साहित्य में मिथकीय पात्रों को मिथकों से ऊपर उठकर बदलते तो देख सकते हैं, लेकिन वे मिथकों से अलग कतई नहीं जाते. शायद इसी वजह से मिथकों में असीम लचीलापन, अकूत समावेशी क्षमता तो होती है लेकिन तोड़-मरोड़ की गुंजाइश नहीं होती. लिहाजा, आधुनिक लेखक मिथकों की पुनर्रचना तक नहीं कर सकते, वे सिर्फ प्राचीन मिथकों से अपने समय के नए मिथक भर गढ़ सकते हैं.

इतिहास की यह अजीब विडंबना है कि जिस देश ने दुनिया को लघु कथाएं दीं, उसका जिक्र साहित्य के इतिहास में बमुश्किल ही मिलता है. भारत की जातक कथाओं से बोकासिओ (14वीं सदी के इतालवी लेखक) ने प्रेरणा प्राप्त की थी और पंचतंत्र से प्रभावित होकर *अरबियन नाइट्स* की कथाएं रची गई थीं. फिर भी लघु कथाओं की जन्मस्थली के रूप में भारत को मान्यता प्रदान नहीं की गई. भारत में आधुनिक लघु कथाओं का जन्म 19वीं सदी में प्रेमचंद, फकीर मोहन सेनापति, बंकिमचंद्र चटोपाध्याय, बिभूति भूषण, वगैरह दिग्गजों के हाथों हुआ. इन कहानियों के बीज भारत की उसी मिथकीय जमीन से फूटे थे.

भारतीय संस्कृति के बारे में किसी धर्म के संदर्भ में सोचना-समझना सही नहीं है, जैसा कि यूरोपीय संस्कृति को ईसाई धर्म के संदर्भ में समझना आसान है. यह सही है कि भिन्न-भिन्न धार्मिक-मिथकीय मान्यताएं और आचार-व्यवहार का मेल संभव नहीं है, लेकिन लंबे समय तक साथ-साथ जीने से एक-दूसरे के कुछ तत्व घुल-मिल जाते हैं. आधुनिक भारतीय लेखकों की अतीत की चेतना में कम से कम तीन विभिन्न संस्कृतियों-हिंदू, भारतीय-इस्लाम, भारतीय-यूरोपीय की छाप साथ-साथ रची-बसी है.

आइए सृष्टि और प्रलय के मिथकों के उदाहरण से इसका अंत करें. ऑस्ट्रेलिया के आदिम बांदीकूट मूल निवासियों के मिथक में 'स्वप्निल समय' या 'रचना काल' का जिक्र है. आदिम काल में धरती बंजर थी, न ग्रह थे, न पह्यी, न जानवर, न संगीत-नृत्य, न कला-साहित्य, न प्रेम और न प्रेमी. ये सभी धरती की सतह के नीचे गहरी निद्रा में थे. अचानक किसी चिनगारी की तरह ये गहरी नींद से उठे और अपनी मौजूदगी धरती पर दर्ज कराने लगे. ऐसी चेतना का जिक्र मूलवासियों के मिथक स्वप्निल समय या रचना काल में है. काल उनकी मान्यताओं के केंद्र में है और ये मान्यताएं चालीस हजार वर्षों से वाचिक परंपरा के जरिए एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जीवंत रही हैं.

यह स्वप्निल समय का मिथक भारतीय सृष्टि और प्रलय की धारणा से काफी मिलता-जुलता है. प्रलय काल में विष्णु शेषनाग की शैया पर अनंत शयनम में विश्राम करते हैं. विष्णु का अनंत शयन रचना के स्वप्न या नए युग की रचना के साथ खत्म होता है. इस तरह स्वप्न ही रचना का बीज है. आदमी सपने देखने में सक्षम है, वह भविष्य के, बेहतर कल के सपने देखता है. इसलिए पूरब हो या पश्चिम, आदिम हो आधुनिक, काल ही रचयिता है और काल ही विनाशक. काल ही स्वप्न दिखाता, रचना और विनाश करता है और काल ही परिवर्तन संभव बनाता है. इसलिए सपने मनुष्य और मिथकों दोनों का अंतर्निहित सत्य हैं.

इलस्ट्रेशनः चंद्रमोहन ज्योति

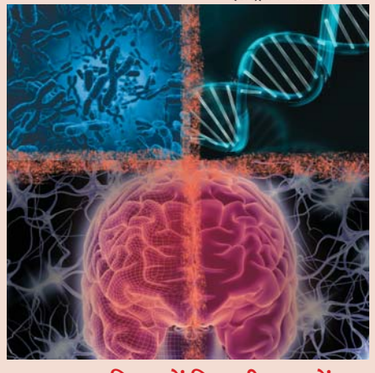

हम साहित्य में मिथकीय पात्रों को मिथकों से ऊपर उठकर बदलते तो देख सकते हैं लेकिन वे मिथकों से अलग कतई नहीं जाते.

—डॉ. ह्यतिभा रॉय ह्यसिद्ध ओड़िया कथाकार हैं

नहीं हूं. इसी तरह से मैं इसका भी हिमायती नहीं हूं कि मिथकीय उपन्यास हिंदू और पुरुष ही लिखें. सोचकर देखिए, अगर एक मुसलमान रामायण या द्रौपदी की कहानी लिखे तो कैसे लिखेगा. एक स्त्री कैसे लिखेगी शकुंतला की कथा. वह नया नजरिया और नई संवेदना होगी.''

यहां एक अहम सवाल यह उठता है कि क्या धार्मिक मिथकों पर लिखने के लिए ईश्वर में विश्वास करना और आस्थावान होना जरूरी है? बैंकर एक बार फिर जवाब देते हैं: ''ये आस्था की नहीं, बल्कि जीवन की कहानियां हैं. मैं ईश्वर के बारे में कुछ नहीं जानता, लेकिन इनसान को जानता हूं.'' लेकिन पटनायक हर व्यक्ति को आस्थावान मानते 'ए कहते हैं कि ''एक नास्तिक व्यक्ति की आस्था नास्तिकता में होती है.'' इसी तरह, अमीश त्रिपाठी भी इन कहानियों को धर्म से जोड़कर देखने से इनकार करते हैं: ''हिंदू होने का ठप्पा और धर्म का आवरण कहानियों के मानवीय पक्ष को कमजोर कर देता है. यह इनसानों की कहानी है. धर्म से इसका कोई संबंध नहीं.''

पटनायक की मानें तो वे मिथकों की ओर इसलिए मुड़े क्योंकि उन्हें वहां अपने जीवन के सवालों के जवाब मिले. हर देश, काल, युग में हर मनुष्य किस चीज की तलाश में है? आर्थिक सुरक्षा, ज्ञान, ताकत और प्रेम. ये क्या हैं?

अशोक बैंकर
लेखक

''हर कहानी की यही नियति है. उसका कोई एक अंतिम अर्थ होता नहीं. हर मनुष्य उसकी अपने ढंग से व्याख्या करता है.''

दशराजन
लेखकः अशोक बैंकर
मंजुल पब्लिकेशन
मूल्य 195 रु.

पटनायक के शब्दों में, ''लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा. बाहरी परिस्थितियां बदलती हैं, युग बदलता है, लेकिन बुनियादी तौर पर इनसान नहीं. इसलिए न सवाल बदलेंगे और न उनके जवाब. मिथक इसलिए क्योंकि वहां जीवन के उन्हीं बुनियादी सवालों का जवाब मिलता है. साथ ही वह हमारी जड़ें और हमारा इतिहास भी है.''

विषयों के चुनाव में इन लेखकों के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और आदतों का भी अहम रोल रहा है. नीलकंठन और सांघी के अनुभव इसे शिद्दत से साबित करते हैं. नीलकंठन पौराणिक कथाओं के खलनायकों को विषय बनाते रहे हैं. आखिर क्यों? ''मैंने रामायण के सभी संस्करण पढ़े हैं. रावण और दूसरे किरदारों के बारे में लोककथाओं से बहुत कुछ जानने को मिलता है. वैसे भी केरल की संस्कृति परस्पर विरोधी है. यहां दुर्योधन के मंदिर भी देखने को मिलेंगे. ऐसे में इन किरदारों में शुरू से ही मेरी दिलचस्पी थी.'' *अजेय*-भाग एक उपन्यास दुर्योधन के नजरिए से लिखा गया है और इसमें दुर्योधन को समानता में विश्वास करने वाला जबकि पांडवों को जातीय भेदभाव करने वालों की तरह पेश किया गया है. प्रेम कहानियों के इस दौर में पौराणिक कथाओं पर उपन्यास? ''कोई भी ह्यकाशक इसे छापने के लिए तैयार न था. जिससे कहो, वही ह्रेम कहानी लेकर आने को कहकर टरका देता. यकीन जानिए, मैंने सोचा भी न था कि इतनी तादाद में युवा मेरी किताबें पसंद करेंगे.''

असुर में रावण का किरदार किसी भी आम आदमी जैसा ही है. वह हंसता है, रोता है, दूसरों की रईसी से जलता है और वह सब कुछ पाने की ख्वाहिश रखता है जो दूसरों के पास है. इस सब के बावजूद वह खुद से शर्मिंदा नहीं है. *असुर* और *अजेय*, दोनों उपन्यासों में वे किरदार नायक हैं जिन्हें आज तक हम-आप सबसे बड़े खलनायकों में गिनते आए हैं. दोनों ही उपन्यासों का तीन विदेशी भाषाओं समेत कुल दस भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है. *असुर* की 6,000 प्रतियां बिक चुकी हैं.

कृष्ण कुंजी और *चाणक्य मंत्र* जैसे पौराणिक/ऐतिहासिक थ्रिलर लिखने वाले सांघी की आदतें ही उनका औजार बनीं. उन्हें बचपन से ही झूठ बोलने की आदत थी. ''झूठ बोलो तो वह सच के इतना करीब होना चाहिए कि किसी को उसके सच होने में जरा भी शंका न हो.'' वे ऐसी-ऐसी कहानियां गढ़ते कि पैरेंट्स को उन पर विश्वास हो जाता. यही कला उन्हें कल्कि जैसे मिथकीय किरदार की मॉडर्न कथा लिखने में काम आई. ''सुनी-सुनाई पौराणिक कथाओं में पाठकों की उतनी दिलचस्पी पैदा नहीं हो पाती लेकिन अगर उसे कुछ दूसरे अंदाज और शैली में उनके सामने पेश किया जाए तो लोग उससे बंध जाते हैं.'' अश्विन ने यही किया. नतीजा: उनके दोनों उपन्यास आज बेस्ट सेलर हैं. अपनी शैली के बारे में उनकी साफ सोच है: ''फिक्शन में पौराणिक कथाओं, इतिहास और तथ्यों का मैं इतना घालमेल कर देता हूं कि पाठक को महसूस ही नहीं होता कि वे फिक्शन पढ़ रहे हैं.'' अपने उपन्यासों में उन्होंने पौराणिक कथाओं के चमत्कारों को विज्ञान के तथ्यों के जरिए स्थापित करने की कोशिश की है. भगवान सिंह कहते हैं कि ''नई पीढ़ी को पौराणिक कथाओं की जानकारी कम है, इसलिए उन्हें जिज्ञासा होती है. ऐसे में जरूरत है कि इन कथाओं को सही और विश्लेषणात्मक अंदाज में पेश करने की जिससे अंधविश्वास न पैदा हो.'' तो कहीं ये लेखक युवा पाठकों को बहका तो नहीं रहे? सांघी कहते हैं, ''बिल्कुल नहीं, बल्कि हम तो उन्हें शिक्षित कर रहे हैं.''

सयाने गुरू विश्वामित्र

किताब में पेश छवि
अनु नाम के राजा के गुरु हैं विश्वामित्र. वे न्याय और आत्मसम्मान की खातिर राजा को युद्ध की राह पर चलने का पाठ पढ़ाते हैं.

पारंपरिक छवि
गायत्री मंत्र समेत ऋग्वेद के तृतीय मंडल के श्लोकों की रचना करने वाले ऋषि.